समय के महत्व को न जानने से होंगे उनके शिकार

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर भाई

समय आ गया है, समय ने करवट बदल दी है जिसका इन्तज़ार हमें युगों से था, हम परिवर्तन चाहते थे। ये हमारी आँखों के सामने फास्ट गति से हरपल परिस्थिति, स्वस्थिति का बदलाव नज़र आ रहा है। प्रकृति ने भी हमें बहुत कुछ दिया है, हमें उसे लौटाना है, उसको भी स्वच्छ करना है। इस प्रकृति ने हमें जन्म दिया, शरीर की पालना भी की और बहुत सुख भी दिया, विशुद्ध पवन, विशुद्ध जल, स्वच्छ आकाश, अग्नि भी दिया तो बहुत तेज नहीं आरामदायक। यह सब प्रकृति ने हमें सुख देकर हमारी पालना की है। हम उनका हृदय से शुक्रिया करें, रोज़ शुक्रिया अदा करें। तो सबकुछ परिवर्तन हो रहा है, तो हमें भी परिवर्तन करना है। चेंज को स्वीकार करना है। जिन्होंने परमात्मा के महापरिवर्तन के कार्य में बहुत मदद की है उन्हें प्रकृति भी साथ देगी और साथ दे भी रही है।

हम समय अनुसार ज़रा विचार करें, हमें स्वयं में क्या चेंज लानी है, चेंज अवश्य लानी है। परमात्मा हमें कहा करते थे वो सब बातें हमें याद आती हैं। बाबा कहते थे समय नाजुक आएगा, चारों और विकारों की आग तेजी से फैलेगी। ऐसे में किसी के अन्दर भी दबा हुआ, छिपा हुआ विकार का अंश होगा तो वो भी वंश पैदा कर देगा। वो अंश के वंश में बदल जाएगा, वो छोटे से बड़े में बदल जाएगा और मनुष्य को काफी परेशान करेगा। जैसे आजकल बहुतों के सामने बातें आ रही हैं कि क्रोध बहुत आ रहा है, बिना मतलब आ रहा है। क्योंकि घर में रहे हैं तो क्रोध का विस्तार बहुत हुआ है। वो दबा हुआ, छिपा हुआ अंश भी वंश का रूप ले लेता है। जो विकारों का बीज हमारे अन्दर है अगर उस बीज को हमने खत्म नहीं किया तो जागृत हो जाएगा, क्योंकि वातावरण मिलने पर वो पल्लवित होता है।

तो हम बहुत ध्यान दें कि हम विकारों से स्वयं को पूर्ण रूप से मुक्त करें। बहुत समय से हमें अलबेलेपन में चलने की आदत हो गई है, हम ढ़ीले हुए हैं, कई तो संशय में भी चल रहे हैं, धारणाएं कईयों की ढ़ीली पड़ी हैं। ये तो बहुत बड़ी गलती हुई। उन्हें सचेत होना है, जागृत होना है। कई पुरूषार्थी बच्चे बहुत तीव्र गति से आगे भी बढ़ रहे हैं और दूसरी ओर कई बच्चे अपने आप को अलबेलेपन में समय को यूं ही गंवा रहे हैं। बहुतों ने कारणे-अकारणे हार खा चुके हैं। हमें हार नहीं खाना है, विजय हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

हमें स्वयं भगवान ने चुना है इस भागीरथ महापरिवर्तन के कार्य के लिए। भगवान के हम बच्चे हैं, जिन्हों को भगवान साथ दे रहा हो! जिसकी पालना स्वयं भगवान कर रहा हो! जिसको गाइडेन्स भगवान से मिल रही हो! क्या वो माया से हार खा सकते हैं! क्या वो जीत नहीं सकते! हम नहीं जीत सकेंगे तो भला और कौन जीत सकेगा!

कई कहते हैं कि हमें तो मालूम है ना कि हम आत्मा हैं, भगवान भी है ये ज्ञान तो हममें है। लेकिन हमने देखा है कि भक्त-सन्यासी बहुत माया से हार खाते रहे हैं, अनेक धर्मों में भी यही हुआ है। उसका कारण एक ही था कि माया से जीतने की यथार्थ विधि नहीं थी। केवल माया को जीतना है, विकारों को छोड़ना है, अपनी कर्मेन्द्रियों पर विजय पानी है, उन्हें शीतल करना है यह कहने से काम तो नहीं चलेगा ना! उसकी प्रॉपर विधि भी हमारे पास होनी चाहिए। विधि के बिना सिद्धि नहीं होती। इसीलिए परमात्मा ने हमें पहली विधि बताई है कि- 'अपने को आत्मा समझ मेरे साथ सम्बन्ध जोड़ना है।'

बहुतों ने कहा हमें ज्ञान तो मिल गया लेकिन हम उसे समझे भी ना! अगर आपको कहीं जाना है रास्ते में प्रकाश हो लेकिन आपकी टाँग ही चलती नहीं, आपकी बाइक में आज तेल नहीं है, आपके पास साधन हैं और तेल नहीं है तो साधन होते हुए भी आप कैसे पहुंचेंगे! तो ये बहुत बड़ी त्रासदी हुई ना! आत्मा का ज्ञान होने पर भी, आत्म-अभिमानी की प्रैक्टिस नहीं हुई। इसीलिए समस्याओं में हम गिरते रहे। बहुत लोग आध्यात्मिक जागृति के अभाव में खुद को खाली महसूस कर रहे हैं, अब हमें उसे भरना होगा। क्योंकि समय की डिमांड यही है कि हम निर्भय बनें और यथार्थ विधि को अपनायें, अपने को भरपूर करें। तब ही हम समय की चुनौतियों को चैलेन्ज कर सकेंगे, चेंज कर सकेंगे।

अभी समस्या आयेगी तो क्या करेंगे...?

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

जिस समय भी परमात्मा को याद करो, कई भाई-बहनें शिकायत करते हैं कि जब हम परमात्मा की याद में बैठते हैं तो और ही ज़्यादा और-और संकल्प आते हैं, परमात्मा तो याद आता ही नहीं है। क्यों नहीं आता है? जब परमात्मा हमारा पिता है, पिता हमारे लिए बंधा हुआ है, क्यों नहीं आता है याद? आना चाहिए ना! लेकिन गलती हमारी ये है, मानो आपका कोई बाप है, उसको आप कहते हो पिता जी, तो आपकी सुनेगा ना! अगर दूसरे को आप कह दो कि पिता जी, पिता जी वो सुनेगा? सुनेगा? वो आपको जवाब देगा? आप कितना भी आधा घंटा बोलते रहो, पिता जी, पिता जी वो पिता जी है ही नहीं तो सुनेगा कैसे? तो हमारी गलती ये होती है कि हम आत्मा बनकर परमात्मा को याद नहीं करते, बॉडी कॉन्शियस में रह करके परमात्मा को कहते हैं पिता जी, तो वो सुनेगा क्यों? वो बॉडी का पिता है ही नहीं। आपके बॉडी का पिता अलग है ना। हम पूछेंगे आपके पिता का नाम क्या है? तो अलग-अलग होता है या दो-तीन भाई होंगे तो एक होगा। तो परमात्मा क्यों नहीं सुनता? क्यों नहीं मदद देता है? क्योंकि हमारी रीति ही ठीक नहीं है। हम शरीर भान में रहकर परमात्मा को याद करना चाहते हैं। और शरीर का पिता वो है ही नहीं। तो वो सुनेगा क्यों? मदद देगा क्यों आपको? भिखारी को वर्सा देंगे क्या? बच्चे को वर्सा दिया जाता है ना!

तो आप शरीरधारी होकर उसको याद करते हो इसलिए वो मदद देता नहीं, सुनता ही नहीं। इसीलिए आप शरीर भान से अलग होकर, आत्मा बनकर परमात्मा को याद करो तो सेकण्ड में कनेक्शन हो जायेगा। जैसे तार-तार का कनेक्शन होता है ना अगर मैं इसका रबड़ नहीं उतारूं और सारी रात क्यों न मैं इसको जोड़ती रहूँ, कनेक्शन होगा? नहीं होगा ना! तो हम गलती ये करते हैं तार का रबड़ तो उतारते नहीं और तार का कनेक्शन जोड़ने चाहते हैं। एक कहानी है इसपर।

राजा जनक के लिए कहते हैं कि उन्होंने ऐलान किया कि मुझे सेकण्ड में जीवनमुक्ति कोई देवे। कहते हैं कई विद्वान, आचार्य सभी आ गये स्टेज पर कि हम जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं, तो कोई नहीं बता सका।

आखिर में क्या हुआ, एक अष्टावक्र, वो स्टेज पर आया। उसने कहा कि मैं आपको एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति का रास्ता बता सकता हूँ। जब वो स्टेज पर आया तो सब विद्वान, आचार्य हँसने लगे कि देखो अब हम लोग नहीं रास्ता बता सके तो ये जो अष्टावक्र है ये कहता है कि मैं रास्ता बताऊंगा। तो अष्टावक्र ने क्या कहा? सभी के बीच में कहा कि ये सभा जो है ना, विद्वान, आचार्यों की नहीं है। ये सभा चमारों की है। क्यों? चमार क्यों कहा? क्योंकि चमार ने चमड़ी को देखा। चमार क्या करता है सारा दिन? चमड़ी का ही काम करता है ना। तो उसने सीधा ही कहा कि ये चमार हैं। आप मंदिर में जाते हो तो चमड़े की चीज़ आपको ले जाने देते हैं बड़े-बड़े मंदिरों में? क्यों बाहर कहते हैं छोड़ के जाओ? तो परमात्मा से मिलने जाते हो और चमड़ी को साथ में लेके जाने चाहते हो तो बताओ कैसे परमात्मा मिलेगा? जड़ चित्र का दर्शन नहीं हो सकता है और डायरेक्ट परमात्मा से कैसे मिलेंगे? मिल ही नहीं सकते।

इसीलिए परमात्मा सुनता ही नहीं है। और शांति होती ही नहीं है और अशांति बढ़ती जा रही है। तो अभी तो हमारे इतने सारे भाई-बहनें विमान को यूज़ करेंगे? मिला विमान आप सबको? अभी समस्या आयेगी तो क्या करेंगे? उड़ जायेंगे।

बाबा का बच्चा समझने से दो फायदे- एक अलबेलापन समाप्त और दूसरा अभिमान समाप्त

राजयोगिनी दादी जानकी जी

सवेरे-सवेरे अमृतवेले बाबा जगाता है, जगाना उनका काम है, और हमको क्या करना है? अच्छी तरह से उनके सामने बैठ जाना है। सवेरे सो नहीं सकते, बाबा ने ऐसी आदत डाली है। जैसे माँ-बाप बचपन से बच्चों में जो आदत डालते हैं वो जीवन भर काम आती है। हम सब बाबा के बच्चे हैं, भले उम्र में बड़े हैं पर बाबा के बच्चे हैं। अपने को छोटा-बड़ा समझना भूल है। छोटा समझेंगे तो अलबेले हो जायेंगे। बड़ा समझेंगे तो अभिमानी हो जायेंगे। तो बाबा का बच्चा समझने से दो फायदे तुरन्त हो जाते हैं- एक अलबेला समाप्त और दूसरा अभिमान समाप्त।

जैसे बाबा शुरू में कहते थे, ऊंची पहाड़ी पर जाने के लिए डबल इंजन लगती है। तो ऊंची स्थिति पर जाने के लिए तुम्हें भी डबल इंजन मिली हुई है। निराकारी भी रहो, निर्विकारी भी रहो। आज बाबा ने कहा याद में नहीं रहेंगे तो विकर्माजीत कैसे बनेंगे? अभी है विकर्माजीत बनने का समय। हमारी विकर्मों पर जीत माना कोई विकल्प न आये। पुराने विकर्म तो विनाश हो जायें पर अभी इतनी जीत हो। जिन रोया तिन खोया, पद कम, सारी कमाई खत्म। पहले आँखों से प्रेम के आँसू बहते थे, बाबा ने कहा यह भी कमज़ोरी है, शो है। मम्मा को देखा कभी प्रेम का भी आँसू नहीं बहाया, प्रेम स्वरूप रही है। इतना गम्भीरता पूर्वक ज्ञान को धारण करने से याद में निरन्तर रही है। ज्ञान गम्भीर बनाता है, गम्भीर में दिखावा नहीं होता है, वह अन्दर ही अन्दर सन्तुष्ट रहेगा, प्रसन्नचित्त रहेगा। उसका अनुभव कहता है बाबा ने इतना दिया है, खुश रहना, राज़ी रहना। राज़ी रहने वाला खुश है, खुश रहने वाला राज़ी रहता है। अपनी अवस्था को ऐसा जमाना, यह है समझदार का काम, तब दिखाई पड़ेगा यह सच्चा राजयोगी है। अवस्था जमाने से पहले याद, विकर्माजीत बनने के लिए याद। कोई विकर्म अब न हो, अभिमान वश या लोभ वश या मान-शान वश अपमान की फीलिंग आ गई, तो बाबा दूर चला गया, मैं यहाँ रह गयी। नहीं तो दूर देश वाला बाबा यहाँ बैठा है- समझा रहा है, दिखा रहा है। ऐसी स्थिति बनाने के लिए बहुत भाग्य दे रहा है। संग का, संगठन का, सेवा का भाग्य मिला है। संगठन में एक-दो को याद दिलाना बहुत अच्छा लगता है। कुछ न भी बोलें, पर जहाँ भी हैं जो भी सेवा कर रहे हैं, याद दिला रहे हैं।

विश्व को क्या पढ़ाना है, वो पढ़ा रहा है, विश्व की राजाई लेने के लिए पढ़ा रहा है। हम पढ़ने के लिए बैठे हैं, कितनी सुन्दर सीन लगती है! बड़ा रुचि से, दिल से पढ़ रहे हैं। जो दिल से पढ़ता है उनकी दिलाराम से दिल लगी रहती है। ऐसे पढ़ाने वाले से दिल लगाना भूल होती है। लेकिन यहाँ पढ़ाने वाले से दिल लग गई है, यह भूल नहीं है। दिलवाला मन्दिर यादगार है, क्योंकि तपस्या दिलवाला के साथ हो सकती है। पहले दिल आराम में आई, फिर दिलवाला के साथ तपस्या में बैठने की शक्ति आ गई। जब दिल खुश नहीं है तो मैं कहाँ और वो कहाँ?

मेरी दिल कभी कठोर होगी, कभी कोमल होगी। जब दिल दिलाराम के पास बैठ गई है, तो दिल आराम में है। प्यार भरी दुआएं बाबा से पाई हैं। इतना प्यार है कि मेरे बच्चे को सिर में खुजली भी न हो। ज़रा कांटा भी न लगे, फूलों की तरह पालता है। जिसमें कोई गुण नहीं उसमें बाबा ने सब गुण भर दिये हैं। कैसा हमारा बाबा कल्याणकारी है।

जितना मास्टर ऑलमाइटी का अनुभव करेंगे... उतना बेहद विश्व की सेवा कर सकेंगे

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

अभी हम इस देह से, इस पुरानी दुनिया से, इन 5 तत्वों से भी पार हो साइलेन्स में बैठे हैं। साइलेन्स एक बड़ी पॉवर है, इसमें सर्व शक्तियाँ समाई हुई हैं। जैसे साइन्स वालों ने साइन्स पॉवर से शक्तिशाली वस्तुएं बनाई हैं- एटम बॉम्ब आदि। तो हम ऑलमाइटी अथॉरिटी अर्थात् सर्व शक्तियों से सम्पन्न परमधाम निवासी हैं। हम आत्मायें पार्टधारी हैं, पार्ट बजाकर अपने घर चले जाने की तैयारी कर रहे हैं। वह आया है पण्डा बनकर हमको अपने साथ कनेक्शन भी जुड़ाया है क्योंकि अब घर वापिस जाना है। तो अब यहाँ बैठे उस साइलेन्स का अनुभव करना है। जब वहाँ चले जायेंगे तब से साइलेन्स का अनुभव वर्णन नहीं कर सकेंगे। तो अब शान्ति का अनुभव भी बाप इस ही जीवन में कराते हैं।

जितना-जितना हम मन-बुद्धि को 5 तत्वों से पार ले जायेंगे तो जो स्वीट साइलेन्स होम है, वहाँ जाकर निवास करेंगे। और लाइट-माइट का अनुभव करेंगे। जैसे सितारे आकाश तत्व के अन्दर अपने-अपने स्थान पर चमकते रहते हैं, वैसे हम भी ब्रह्म तत्व में जाकर बाप के साथ उस साइलेन्स की शक्ति का अनुभव कर सकते हैं। बाप को इन आँखों से नहीं देख सकते हैं लेकिन उसके कर्त्तव्य द्वारा, उनके गुणों द्वारा, शक्तियों द्वारा उसका अनुभव होता है। जो जितना हम उस स्थिति में रहेंगे उतना ही हम उस साइलेन्स पॉवर का अनुभव करेंगे। उस याद से हमारे अनेक जन्म के विकर्म विनाश होते हैं और मन के संकल्प-विकल्प भी मर्ज हो जाते हैं। मास्टर ऑलमाइटी की स्टेज का अनुभव होता है। जितना-जितना अभ्यास करते जायेंगे उतना बेहद विश्व की सेवा कर सकेंगे। जो वाचा द्वारा हम सर्विस नहीं कर पाते, वह हम समर्थ संकल्प द्वारा दूर वाली आत्माओं की सेवा कर सकते हैं। बाबा कहते हैं आपके बहुत भक्त हैं, जो आपका आह्वान कर रहे हैं, प्यासे हैं। तो वे हमारी झलक को कब देख सकते हैं? जब हम एकाग्र अवस्था में रहेंगे। हमारा संकल्प उतना चले जो समर्थ हो, सेवा अर्थ हो- व्यर्थ न जावे। ऐसा गुप्त पुरूषार्थ चाहिए। बुद्धियोग की लाइन क्लियर हो, बुद्धि पवित्र हो तो बाप की प्रेरणाओं को, बाप की पॉवर को कैच कर सकते हैं।

जब हम देह से निकल बाप को याद करते हैं तो बुद्धियोग जुट जाता है, तब ही बाप से हम सर्वशक्तियों का अनुभव कर सकते हैं। जब हम उन 5 तत्वों से पार हो जाते हैं, पृथ्वी के आकर्षण से परे हो जाते हैं, तब ही हम रीयल शान्ति का अनुभव कर सकते हैं।

हम दुनिया की निगाहों से दूर, आवाज़ से परे परम शान्ति का अनुभव करते हैं, तो आवाज़ में आना पसन्द नहीं आता। हम सिर्फ पार्ट बजाने के लिए कर्मेन्द्रियों का आधार लेकर आते हैं- ऐसे अनुभव होगा।

इस साइलेन्स की शक्ति से क्विक सर्विस कर सकते हैं। साइलेन्स पॉवर दूर-दूर में जाकर काम करेगी। बाबा कहते थे बच्चे तुम विश्व कल्याणी हो। तो हमारा विचार चलता कि हम सारे विश्व की सेवा कैसे करेंगे! जब साइलेन्स पॉवर कई जन्मों के विकर्मों को भस्म कर सकती है तो विश्व की आत्माओं की सेवा क्यों नहीं कर सकती! हम सूक्ष्म में किसी भी आत्मा को बुला सकते हैं, उनसे रूहरिहान कर सकते हैं, उसको लाइट-माइट का दान दे सकते हैं। साइलेन्स पॉवर से ऐसा औरों को अनुभव होगा। सेन्टर पर पांव रखेंगे तो जैसे उन्हों को सन्नाटा महसूस होगा। महसूस होगा तो कितनी शान्ति है। यह बहुत मीठी अवस्था है। इससे बहुत शान्ति, अतीन्द्रिय सुख की महसूसता होती है।